

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम

इरु. ग्रामी

दिनांक २२.८.२०१९ पृष्ठ सं. १५ कॉलम २०६

हकूमि में गाजर घास जागरूकता सप्ताह का आयोजन

गाजर घास पर्यावरण व जैव विविधता के लिए गंभीर खतरा : डॉ. समुन्द्र

हरियाणा न्यूज अहिसार

हकूमि के सख्त विज्ञान विभाग द्वारा 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास जागरूकता सप्ताह चलाया गया। यह जागरूकता अभियान जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से चलाया गया। इस

■ गाजर घास के नुकसान एवं रोकथाम के बारे में जानकारी दी गयी में किसानों को अधियान के अंतर्गत एचएयू की टीम ने पीली मंदीरी, माधोसिंधाना, ढांड, बड़ोपल और भाटोल जाटान आदि गांवों में किसानों को

गाजर घास के बारे में जागरूक किया व इसको मिटाने का संकल्प लिया। विभागाध्यक्ष डॉ. समुन्द्र सिंह ने बताया कि प्रकृति में अत्यंत महत्वपूर्ण वनस्पतियों के अलावा कुछ वनस्पतियां ऐसी भी हैं, जोकि धीरे-धीरे एक अधियापक का रूप लेती जा रही हैं। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर के तरह की पत्तियां बाली एक वनस्पति काफी त्रेजी से बढ़ने और फैलने लगती हैं। इसे गाजर घास, कॉर्गेस घास या चट्टक चांदी आदि नामों से जाना जाता है। उन्होंने हकूमि के एनएसएस छात्रों



हिसार। गाजर घास जागरूकता अभियान के दौरान अधिकारीगण व किसान

फोटो: हरिभूमि

को संबोधित करते हुए गाजर घास के नक्सान एवं रोकथाम के बारे में जानकारी दी। जागरूकता सप्ताह अभियान की शुरूआत अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. सतबीर पुनिया की अगुवाई में फतेहाबाद के गांव ढांड से की गई थी। डॉ. पुनिया ने बताया कि यह घास सड़क के किनारे, पाकों, खेल के मैदानों, रेलवे लाइन के साथ खाली पड़े स्थानों पर फैल चुका है। इस घास के कारण मनुष्यों के साथ पशुओं में भी बीमारी के लक्षण आने लगे हैं। उन्होंने

बताया कि इसके संपर्क में आने से मनुष्यों में एमिज्मा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां जा जाती हैं।

इसी के अंतर्गत गरजकीय बहुतकनीकी कॉलेज में छात्रों को संबोधित करते हुए डॉ. टोडरमल पुनिया ने बताया कि यह घास आज देश में लगभग 350 लाख हेक्टेयर भूमि में पैर पसार चका है। जब यह एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है। जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की

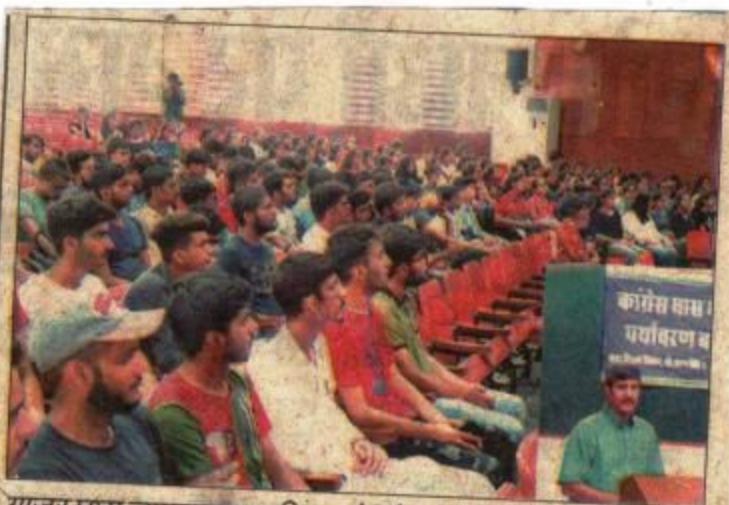
संभावना पैदा हो गई है। गाजर घास के एक पौधे से लगभग 10000 से 20000 बीज पैदा हो सकता है, जोकि जमीन में पुनः नमी पाकर अंकुरित हो जाते हैं। इस खरपतवार से खाद्यान्न फसलों में लगभग 40 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है।

वैज्ञानिक डॉ. सुशील कुमार ने इस घास के निवारण के लिए उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में बताया। कुछ शाकनाशीयों के प्रयोग जैसे एट्राजिन-मेट्रिब्यूजिन 0.5 प्रतिशत व ग्लाफोसेट 1-1.5 प्रतिशत का प्रयोग कर इस खरपतवार को नष्ट किया जा सकता है। उन्होंने छात्रों को इससे कम्पोस्ट बनाने का तरीका बताया तथा इस खरपतवार की रोकथाम के सामूहिक उपाय बताए।

इस अवसर पर मनजीत ने जैविक कीट नियन्त्रण द्वारा गाजर घास की रोकथाम पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के अंतर्गत गरजकीय माद्यमिक विद्यालय ब्राह्मणान में डॉ. सतबीर पुनिया ने छात्रों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवधारणा कराय। इस दौरान कॉलेज के प्रचार सुनील कुमार, लेक्चरर प्रबीण पानू, संदीप कुमार, घनश्याम आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पंजाब के सरी
दिनांक २३.७.२०१७ पृष्ठ सं. ५ कॉलम ७-८



गाजर धास जागरूकता अभियान के दौरान अधिकारीगण व किसान।

पर्यावरण और जैव विविधता के लिए गंभीर खतरा 'गाजर धास'

हिसार, 22 अगस्त (ब्लूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदस्य विज्ञान विभाग द्वारा गाजर धास जागरूकता सप्ताह चलाया गया। यह जागरूकता अभियान, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से चलाया गया।

इस अभियान के अंतर्गत एच.ए.यू. की टीम ने पीली मंदौरी, माधोसिधाना, ढांड, बडोपल और भाटोल जाटान आदि गांवों में किसानों को गाजर धास के बारे में जागरूक किया व इसको मिटाने का संकल्प लिया। विभागाध्यक्ष डा. समुंद्र सिंह व मुख्य अन्वेषक डा. सतवीर पूर्णिया ने बताया कि यह धास सङ्कट के किनारे, पाकों, खेल के मैदानों, रेलवे लाइन के साथ खाली पड़े स्थानों पर फैल

चुका है। इस धास के कारण न केवल मनुष्यों में बल्कि पशुओं में भी बीमारी के लक्षण आने लगे हैं। उन्होंने बताया कि इसके संपर्क में आने से मनुष्यों में एंजिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी बीमारियां आ जाती हैं। वहाँ गजकीय बहुतकनीकी कालेज, हिसार में छात्रों को संबोधित करते हुए डा. योडरमल पूर्णिया ने बताया कि यह धास देश में लगभग 350 लाख हैक्टेयर भूमि में पैर पसार चुका है। जब यह एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है। जिसके कारण अनेक महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरणगाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है। इस खरपतवार से खाद्यान्न फसलों में लगभग 40 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम भैंस कुंज ।०।१२०।
दिनांक २३।४।२०१९ पृष्ठ सं। ।८ कॉलम ६-८

जैव विविधता के लिए खतरा है गाजर घास

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सश्य विज्ञान विभाग की ओर से 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास जागरूकता सप्ताह चलाया गया। यह जागरूकता अभियान जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत एचएयू की टीम ने पीली मंदौरी, माधो सिंधाना, ढांड, बड़ोपल और भाटोल जाटान आदि गांवों में किसानों को गाजर घास के बारे में जागरूक किया व इसको मिटाने का संकल्प लिया। विभागाध्यक्ष डा. समुंदर सिंह ने बताया कि प्रकृति में अत्यंत महत्वपूर्ण वनस्पतियों के अलावा कुछ वनस्पतियां ऐसी भी हैं, जोकि धीरे-धीरे एक अभियाप का रूप लेती जा रही हैं। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर के तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति



गाजर घास जागरूकता अभियान के दौरान मौजूद अधिकारीगण व किसान। • जागरण

काफी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती है। इसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नामों से जाना जाता है। उन्होंने हक्किय के एनएसएस छात्रों को संबोधित करते हुए गाजर घास के नुकसान एवं रोकथाम के बारे में जानकारी दी। जागरूकता सप्ताह अभियान की शुरुआत अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डा. सतचार पुनिया की अगुवाई में फतेहाबाद के गांव ढांड से की गई थी।

डा. पुनिया ने बताया कि यह घास सड़क के किनारे, पाकों, खेल के मैदानों, रेलवे लाइन के साथ खाली पड़े स्थानों पर फैल चुका है। अंतर्गत राजकीय बहुतकनीकी कॉलेज, हिसार में छात्रों को संबोधित करते हुए डा. टोडरमल पूनियां ने बताया कि यह घास आज देश में लगभग 350 लाख हेक्टेयर भूमि में पैर पसार चुका है। वैज्ञानिक डा. सुशील कुमार ने इस घास के निवारण के लिए उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम अभियान
दिनांक २१.६.२०१९ पृष्ठ सं. २ कॉलम २-४

पर्यावरण और जैव विविधता के लिए गंभीर खतरा है गाजर घासः विशेषज्ञ

हिसार/22 अगस्त/पीटी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के समय विज्ञान विभाग द्वारा बबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से गाजर घास जागरूकता समाज के अंतर्गत फैली मंडीरी, याथे सिंधारा, दांड, बडोफल और भाटोल जाटान आदि जारी किया गया जिसके द्वारा गाजर घास के बढ़े जैवरक्षक किया जा सकता है। इसको मिटाने का संकल्प हिस्पा। विश्वविद्यालय के समूदार सिंह ने घटना कि प्रकृति में अस्तर महत्वपूर्ण जैवविविधताओं के अंतर्गत कृषि जैवविविधताओं येहाँ भी हैं, जोकि धीरे-धीरे एक अभियान का रूप लेता जा रहा है। बरसात का मौसम तूफ़ द्वारा भी गाजर के लाल बो चिंचक वारी एक बनस्ती करते हैं तो जैवी से बढ़ने और कैलने लगता



है। इसे गाजर घास, कॉरियर घास या बटक बढ़ानी आदि जारी करना चाहिए है। उन्होंने इकावि के प्रणालीएस उपरोक्तों को संशोधित करते हुए गाजर घास के नकारात्मक एवं एकलकारी के बारे में जागरूक किया। जागरूकता समाज अभियान की दुरुआव भवानी भारतीय खरपतवार अनुसंधान यांत्रिकीय

हिसार केन्द्र के मुख्य अध्येतक डॉ. सत्येश चौधरी जैविक और महत्वपूर्ण जैवविविधता के अंतर्गत कृषि विभाग द्वारा जारी गई थी। डॉ. चौधरी ने जातक कि यह घास सहज के लिये, पार्कों, खेतों के गेटवे, रेलवे लाइन में सामग्री की जगती है। इसके अंतर्गत गाजर के बढ़ावने को कर्त्तव्य, हिसार में यात्री को संशोधित करते हुए डॉ. योहानल परिवार के बताया कि यह घास आज दश में लगभग 350

मीघारी के लक्ष्य बने लगे हैं। उन्होंने बताया कि इसके संपर्क में आने से बन्धुओं में छीं रुप, एलवी, बुखर, दगा वैसी जीमारियां जा जाती हैं। इसके अंतर्गत गाजर के गेटवे, रेलवे लाइन में यात्री की जगती है, तो उन्हें अल्प-घास किसी भूम्य पौधे को जब्ते नहीं रहते हैं। जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण बढ़ी बृद्धियों और बढ़ावाओं के नुस्खे जाने की जीमारियां पैदा हो गई हैं। गाजर घास के एक रैखे से लगभग

10000 से 20000 बीज ऐसी हो सकता है, जोकि जमीन में पुनः नवीं लाकर अनुकूलित हो जाते हैं। इस खरपतवार से खाद्यान्न फारमली में लगभग 40 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। वैज्ञानिक डॉ. मुश्ताक तुमर ने इस घास के निकारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के जारी में जारी। कुल हाफनायनों के प्रयोग वैसे एट्रोबायोलॉजिक 0.5 प्रतिशत व एट्रोफोलेट 1-1.5 प्रतिशत का प्रयोग करके इस खरपतवार को नष्ट किया जा सकता है। उन्होंने उसी को इससे कम्पोट जानने का तरीका बताया तथा इस खरपतवार की रोकथाम के साथौरिक उपयोग किया। इस अवसर पर मवजीत ने जैविक कोट निवायन द्वारा गाजर घास की रोकथाम पर प्रकाश दिला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम सिटी पत्स
दिनांक 22. 8. 2019. पृष्ठ सं. 4..... कॉलम ... 1-4.....

पर्यावरण और जैव विविधता के लिए गंभीर खतरा है गाजर घास

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सख्य विज्ञान विभाग द्वारा चलाया गया गाजर घास जागरूकता सासाह चलाया गया। यह जागरूकता अभियान जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत एचएसू की टीम ने पीली मट्टी, माथे सिंजाना, ढांड, बड़ोपल और भाटोल जाटान आदि गाँवों में किसानों को गाजर घास के बारे में जागरूक किया व इसके मिटाने का संकल्प लिया। विभागाध्यक्ष डॉ. समुंदर सिंह ने बताया कि प्रकृति में अल्पत महत्वपूर्ण बनस्पतियों के अलावा कुछ बनस्पतियां ऐसी भी हैं, जोकि धोरे-धोरे एक अभियाप का रूप लेती जा रही हैं। उन्होंने हक्किं के एनएसएस छात्रों को संबोधित करते हुए गाजर घास के नुकसान एवं रोकथाम के बारे में जानकारी दी।

जागरूकता सासाह अभियान की शुरुआत अखिल भारतीय खरपतवार



हिसार। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी।

अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. सतवीर पुनिया की अगुवाई में फतेहाबाद के गाँव ढांड से की गई थी। डॉ. पुनिया ने बताया कि यह घास सङ्क्रम के किनारे, पाकों, खेल के मैदानों, रेलवे लाइन के साथ खाली पड़े स्थानों पर फैल चुका है। इस घास के कारण न केवल मनुष्यों में बहिक

पशुओं में भी बीमारी के लकड़ा आने लगे हैं। उन्होंने बताया कि इसके संसर्क में आने से मनुष्यों में एरिजामा, एलजी, बुडाओ, दमा जैसी बीमारियां जा जाती हैं। इसी के अंतर्गत राजकीय बहुतकनीकी कॉलेज, हिसार में छात्रों को संबोधित करते हुए डॉ. टोडरमल पुनिया ने बताया कि यह घास आज देश

में लगभग 350 लाख हेक्टेयर भूमि में पैर पसार चुका है। जब यह एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है। जिसके कारण अनेकों महात्वपूर्ण जड़ी बूटियों और चरघाझों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है।

वैज्ञानिक डॉ. सुशील कुमार ने इस घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में बताया तथा इस खरपतवार की रोकथाम के सम्मुहिक उपाय बताए। इस अवसर पर मनजीत ने जैविक कोट नियंत्रण द्वारा गाजर घास की रोकथाम पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के अंतर्गत राजकीय मान्यमान विद्यालय बहुहांगा में डॉ. सतवीर पुनिया ने छात्रों को गाजर घास के नुकसान के बारे में अवकाश कराया और इसे जड़ से मिटाने का संकल्प लिया।

इस दैरान कॉलेज के प्राचार्य सुनील कुमार, लेक्चरर प्रवीर पाण्डु, संदीप कुमार, घनस्थाम आदि भी जूनूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम जिल्हा प्राकृति २०१८
दिनांक २२.८.२०१९ पृष्ठ सं. ६ कॉलम १-५

गाजर घास पर्यावरण व जैव विविधता के लिए गंभीर खतरा : डा. समुन्द्र

हिसार, 22 अगस्त (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सम्बन्धित विभाग द्वारा 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास खागड़कर्ता समाज घटनाया गया। यह जागरूकता अभियान खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत एचएस को टीम ने पौली नंदीरो, माथो सिंधाना, ढांड, बहोपल और भादोल जाटान आदि गांवों में किसानों को गाजर घास के घारे में जागरूक किया व इसकी मिटाने का संकल्प लिया।

विभागाध्यक्ष डा. सर्वदेव सिंह ने बताया कि प्रकृति में अल्पतं महत्वपूर्ण बनस्पतियों के अलावा कुछ बनस्पतियों ऐसी भी है, जोकि भीर-भीरे एक अभियाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का भीसम शुक्र होते ही गाजर के तरह की पत्तियाँ याली एक बनस्पति कामी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती हैं। इसे गाजर घास, कॉर्सेस घास या चट्टक नामों आदि नामों से जाना जाता है। उन्होंने हक्किय के एनएसएस लाइंगों को संबोधित करते हुए गाजर घास के नुकसान एवं रोकथाम के घारे में जानकारी दी।



जागरूकता समाज अभियान की शुरुआत अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डा. सलवीर पुनिया की अगुवाई में फेलहाथाल के गांव ढांड से की गई थी। डा. पुनिया ने बताया कि यह घास राइक के किनारे, पाकों, खेल के मैदानों, रेलवे स्टेशन के साथ साली पड़े स्थानों पर फैल चुका है। इस घास के कारण न केवल मनुष्यों में बल्कि पशुओं में भी बीमारी के लक्षण आने लगे हैं। उन्होंने बताया कि इसके संपर्क में आने से मनुष्यों में एडिमा, एलर्जी, बुखार, दमा और बीमारियाँ जा जाती हैं।

इसी के अंतर्गत राजकीय बहुतानीकी कॉलेज, हिसार में छात्रों को संबोधित करते हुए डा. टोडरमल पुनिया ने बताया कि

यह घास आज देश में स्थगभग 350 लाख हेक्टेयर भूमि में पैर पसार चुका है। जब यह एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है। जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी बूटियाँ और चरागाहों के नष्ट हो जाने की संभावना पैदा हो गई है। गाजर घास के एक पौधे से लगभग 10000 से 20000 बीज पैदा हो सकता है, जोकि जर्मीन में पुरुष नगी पाकर अंकुरित हो जाती है। इस खरपतवार से खाद्यान्न फसलों में लगभग 40 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है।

वैज्ञानिक डा. सुरोल कुमार ने इस घास के निवारण हेतु उपचार में लाए जाने वाले रसायनों के घारे में बताया। कुछ शाकनाशियों के प्रयोग जैसे

एट्रोजिन/मीट्रोब्यूजन 0.5 प्रतिशत व ग्लाफोयेट 1-1.5 प्रतिशत का प्रयोग करके इस खरपतवार को नष्ट किया जा सकता है। उन्होंने छात्रों को इससे कम्पोस्ट बनाने का तरीका बताया तथा इस खरपतवार की रोकथाम के सामूहिक उपाय बताए। इस अवसर पर मननोत्त ने जैविक कॉट नियंत्रण द्वारा गाजर घास की रोकथाम पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के अंतर्गत राजकीय नाल्मिक विद्यालय बालाङ्गा में डा. सलवीर पुनिया ने छात्रों को गाजर घास के नुकसान के घारे में अवगत कराया और इसे जाह में पिटाने का संकल्प लिया।

इस दीर्घ काले वर्ष के प्रचार्य की सुरील कुमार, लोकमन ब्राह्मण पाल, संदीप कुमार, धनश्याम आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ऊभर उजाला
दिनांक २३.८.२०१९ पृष्ठ सं. २ कॉलम ६.७

'स्वस्थ भोजन-स्वस्थ दिमाग' विषय पर प्रशिक्षण



प्रशिक्षणार्थी छात्राओं के साथ सह छात्र कल्याण निदेशक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान।

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय के अंतर्गत काठंसिलिंग ऐंड प्लेसमेंट इकाई द्वारा खाद्य एवं पोषण विभाग के सहयोग से गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ हुआ।

इस प्रशिक्षण में 45 छात्राएं भाग ले रही हैं। प्रशिक्षण का विषय स्वस्थ भोजन स्वस्थ दिमाग रहा। सह छात्र कल्याण निदेशक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने निदेशालय की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए

छात्राओं को इस प्रकार के प्रशिक्षणों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

प्रशिक्षण कॉर्डिनेटर डॉ. उर्वशी नांदल ने सभी छात्राओं का स्वागत किया और प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से बताते हुए पोषण की महत्ता के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि आजकल के युवाओं में पौष्टिक भोजन की महत्ता के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं है, इसलिए छात्राओं को जागरूक एवं प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है।

चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम
दिनांक .23.08.2019. पृष्ठ सं. 2, 16. कॉलम 7-8, 7-8.

युवाओं को पौष्टिक भोजन के प्रति होना चाहिए जागरूक

हिसार। एचएयू के छात्र कल्याण निदेशालय के अन्तर्गत कार्डिनेटर डॉ. अमेन्द्र सांगवान ने एंड प्लेसमेंट इकाई की ओर से खाद्य एवं पोषण विभाग के सहयोग से गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ हुआ। इस प्रशिक्षण में 45 छात्राएं हिस्सा ले रही हैं। प्रशिक्षण का विषय स्वस्थ भोजन, स्वस्थ दिमाग रहा। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. अमेन्द्र सांगवान ने

निदेशालय की गतिविधियों में छात्राओं को इस प्रकार के प्रशिक्षणों में बढ़ चढ़ कर शामिल होने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण कोर्डिनेटर डॉ. उर्वशी नांदल ने बताया कि आजकल के युवाओं में पौष्टिक भोजन की महत्ता के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं है, इसलिए छात्राओं को जागरूक एवं प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है।

होम साइंस कॉलेज में प्रतिक्षण शुरू

हिसार। हक्कीवि के छात्र कल्याण निदेशालय के अन्तर्गत कार्डिनेटर डॉ. अमेन्द्र सांगवान ने एंड प्लेसमेंट इकाई द्वारा खाद्य एवं पोषण विभाग के सहयोग से गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ हुआ। इस प्रशिक्षण में 45 छात्राएं भाग ले रही हैं। इस अवसर पर सह छात्र कल्याण निदेशक डॉ. अमेन्द्र सांगवान ने निदेशालय की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को इस प्रकार के प्रशिक्षणों में बढ़चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण कोर्डिनेटर डॉ. उर्वशी नांदल ने सभी छात्राओं का स्वागत किया और प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से बताते हुए पोषण की महत्ता के बारे में चर्चा की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम नामः द्वा॒
दिनांक २२.९.२०१९ पृष्ठ सं. २ कॉलम १.३

स्वरथ भोजन स्वरथ दिमाग पर प्रशिक्षण आरंभ



हिसार/22 अगस्त/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय के अन्तर्गत कार्डिसिलिंग एंड प्लेसमेंट इकाई द्वारा खाद्य एवं पोषण विभाग के सहयोग से गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए आरंभ हुए प्रशिक्षण में 45 छात्राएं भाग ले-

रही हैं। प्रशिक्षण का विषय है: स्वस्थ भोजन स्वस्थ दिमाग। इस अवसर पर सह छात्र कल्याण निदेशक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने छात्राओं को इस प्रकार के प्रशिक्षणों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण को-आर्डिनेटर डॉ. उर्वशी नांदल ने प्रशिक्षण के बारे में बताते

हुए पोषण की महत्व के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि आजकल के युवाओं में पौष्टिक भोजन की महत्व के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं हैं, इसलिए छात्राओं को जागरूक एवं प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम सिटी प्रेस
दिनांक २२.६.२०१९ पृष्ठ सं. ३ कॉलम ६-८

हफ्ते में गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

सिटी पल्स न्यूज, हिसार।
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र
कल्याण निदेशालय के अन्तर्गत
कार्डिनेटिंग एंड प्लेसमेंट इकाई द्वारा
खाद्य एवं पोषण विभाग के सहयोग
से गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए
दस दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ हुआ।
इस प्रशिक्षण में 45 छात्राएं भाग ले
रही हैं। प्रशिक्षण का विषय है: स्वस्थ
भोजन स्वस्थ दिमाग।

इस अवसर पर सह छात्र
कल्याण निदेशक डॉ. ओमेन्द्र
सांगवान ने निदेशालय की
गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए
छात्राओं को इस प्रकार के प्रशिक्षणों
में बढ़ चढ़कर भाग लेने के लिए
प्रेरित किया।

प्रशिक्षण कार्डिनेटर डॉ. उर्वशी



हिसार। सह छात्र कल्याण निदेशक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान प्रशिक्षणार्थी
छात्राओं के साथ।

नांदल ने सभी छात्राओं का स्वागत
किया और प्रशिक्षण के बारे में विस्तार
से बताते हुए पोषण की महत्ता के बारे
में चर्चा की। उन्होंने बताया कि
आजकल के युवाओं में पौष्टिक

भोजन की महत्ता के बारे में ज्यादा
जान नहीं हैं, इसलिए छात्राओं को
जागरूक एवं प्रोत्साहित करने के
लिए इस प्रशिक्षण का आयोजन
किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम निट्प शोट २०२४
दिनांक 22.8.2019. पृष्ठ सं. ३ कॉलम ७.९.....

गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ



हिसार, 22 अगस्त (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय के अन्तर्गत काउँसिलिंग एंड प्लेसमेंट इकाई द्वारा खाद्य एवं पोषण विभाग के सहयोग से गृह विज्ञान की छात्राओं के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ हुआ। इस प्रशिक्षण में 45 छात्राएं भाग ले रही हैं। प्रशिक्षण का विषय है: स्वस्थ भोजन स्वस्थ दिमाग। इस अवसर पर सह छात्र कल्याण निदेशक डा. ओमेन्द्र सांगवान ने निदेशालय की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को इस प्रकार के प्रशिक्षणों में बढ़ चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण कार्डिनेटर डॉ. उर्वशी नांदल ने सभी छात्राओं का स्वागत किया और प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से बताते हुए पोषण की महत्ता के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि आजकल के युवाओं में पौष्टिक भोजन की महत्ता के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं हैं, इसलिए छात्राओं को जागरूक एवं प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ज्ञानि का अखबार, जागरूक
दिनांक 23.8.2019 पृष्ठ सं. 2, 2, 19 कॉलम कृष्ण !.....

जीजेरू के होम साइंस कॉलेज में मनाया कृष्ण जन्मोत्सव

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के होम साइंस कॉलेज के पारिवारिक संसाधन विभाग की छात्राओं ने बीरबार को जन्माष्टमी का पर्व मनाया।

उत्सव का शुभारंभ विभागाध्यक्षा डॉ. किरण सिंह व अन्य सहायक प्रोफेसरों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। इस उपलक्ष्य पर छात्राओं ने कृष्ण के गीतों पर नृत्य कर व कृष्ण रासलीला दिखाकर वातावरण को कृष्णमयी बना दिया।

इस अवसर पर डॉ. बीनू सहगल ने एक मनमोहक गीत के साथ अपने कृष्ण प्रेम की भावना को व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन पारिवारिक संसाधन प्रबंधन पाठ्यक्रम समन्वयक सहायक प्रोफेसर डॉ. कविता दुआ ने किया। अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

एचएयू के होम साइंस कॉलेज में मनाया श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के होम साइंस कॉलेज के पारिवारिक संसाधन विभाग की स्टूडेंट्स ने जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया। इवेंट मैनेजमेंट की छात्राओं ने कॉलेज परिसर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर खूबसूरती से सजाया। उत्सव का शुभारंभ विभागाध्यक्षा डॉ. किरण सिंह व अन्य सहायक प्रोफेसरों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

एचएयू के होम साइंस कॉलेज में मनाया कृष्ण जन्मोत्सव

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के होम साइंस कॉलेज के पारिवारिक संसाधन विभाग की स्टूडेंट्स ने जन्माष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया। उत्सव का शुभारंभ विभागाध्यक्षा डॉ. किरण सिंह व अन्य सहायक प्रोफेसरों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर के किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ~~सिटी पल्स~~
दिनांक २२.३.२०१९ पृष्ठ सं. २ कॉलम १.....

एचएयू के होम साइंस कॉलेज में मनाया कृष्ण जन्मोत्सव

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के होम साइंस कालेज के पारिवारिक संसाधन विभाग की स्टूडेंट्स ने जन्माष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया। इवेंट मैनेजमेंट की छात्राओं ने कालेज परिसर को श्री कृष्ण के जन्म के अवसर पर बड़ी खूबसूरती से सजाया। उत्सव का शुभारंभ विभागाध्यक्षा डॉ. किरण सिंह व अन्य सहायक प्रोफेसरों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस उपलक्ष पर छात्राओं ने कृष्ण के गीतों पर नृत्य कर व कृष्ण रासलीला दिखाकर वातावरण को कृष्णमयी बना दिया। इस अवसर पर डॉ. बीनू सहगल ने भी एक मनमोहक गीत के साथ अपने कृष्ण प्रेम की भावना को व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन पारिवारिक संसाधन प्रबंधन पाठ्यक्रम समन्वयक सहायक प्रोफेसर डॉ. कविता दुआ ने किया। अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया।